पाठ 1

- मैं यहाँ क्यों आया?

- क्या मैं यहाँ तुम्हें चोट पहुँचाने आया हूँ?

-नहीं।

-क्या मैं यहां आपके परिवार या आपके दोस्तों को चोट पहुंचाने आया हूं?

-नहीं।

- क्या मैं यहां आपकी जमीन या आपके मवेशी चुराने आया हूं?

-नहीं।

- मैं यहाँ क्यों आया?

-मैं यहां सिर्फ एक बात के लिए आया हूं।

-मैं यहां आपको दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण संदेश बताने आया हूं।

-मैं यहां आपको परमेशवर का संदेश सुनाने आया हूं।

-मैं यहां आपको गोरे आदमी का संदेश बताने नहीं आया हूं।

-मैं यहां आपको काले आदमी का संदेश बताने नहीं आया हूं।

-मैं यहां आपको सिर्फ परमेशवर का संदेश सुनाने आया हूं।

-यदि आपके मुखिया ने आप सभी को एक महत्वपूर्ण संदेश के लिए एक साथ बुलाया, तो क्या आप आएंगे?

-हाँ, तुम आओगे।

- आप क्यों आएंगे?

-क्योंकि मुखिया के पास आपको बताने के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश होगा।

-प्रमुख का संदेश महत्वपूर्ण है, लेकिन एक संदेश है जो और भी महत्वपूर्ण है.

- किसका संदेश मुखिया के संदेश से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है?

-परमेशवर का संदेश।

-दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण संदेश किसका संदेश है?

-परमेशवर का संदेश।

-परमेशवर का संदेश दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण संदेश क्यों है?

-क्योंकि केवल परमेशवर ने कभी झूठ नहीं बोला।

-क्योंकि केवल परमेशवर ने हमेशा सच कहा है।

-लोगों में से किसने कभी झूठ नहीं बोला?

- सभी लोगों ने झूठ बोला है।

- तुम में से किसने कभी झूठ नहीं बोला?

- आप सभी ने झूठ बोला है।

-मैंने भी अतीत में झूठ बोला है।

-सभी गोरे लोगों ने झूठ बोला है।

-सभी अश्वेत लोगों ने झूठ बोला है।

- सभी लोगों ने झूठ बोला है।

- अकेले किसने कभी झूठ नहीं बोला?

-परमेशवर।

-क्योंकि परमेशवर ने कभी झूठ नहीं बोला, परमेशवर ही एक है जो हमें सच बता सकता है।

-क्योंकि परमेशवर ने कभी झूठ नहीं बोला, ईश्वर ही एक है जो हमें ईश्वर के बारे में सच्चाई बता सकता है।

-क्योंकि परमेशवर ने कभी झूठ नहीं बोला, परमेशवर का संदेश पूरी दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण संदेश है।

-पुरुषों के लिए, क्षेत्र में काम करने से ज्यादा महत्वपूर्ण परमेशवर का संदेश है।

-क्यों?

-क्योंकि केवल ईश्वर का संदेश ही सभी मनुष्यों को मृत्यु से बचा सकता है।

-महिलाओं के लिए खाना बनाने से ज्यादा जरूरी है परमेशवर का संदेश।

-क्यों?

-क्योंकि केवल परमेशवर का संदेश ही सभी महिलाओं को मौत से बचा सकता है।

-बच्चों के लिए खेलने से ज्यादा जरूरी है परमेशवर का संदेश।

-क्यों?

-क्योंकि परमेशवर का संदेश ही सभी बच्चों को मौत से बचा सकता है।

-परमेशवर का संदेश कहां है?

-परमेशवर का संदेश परमेशवर की किताब में है।

-परमेशवर की किताब का नाम क्या है?

-परमेशवर की किताब का नाम बाइबिल है।

-परमेशवर का संदेश परमेशवर की किताब में कैसे आया?

-परमेशवर अपनी किताब खुद लिख सकते थे, लेकिन परमेशवर ने ऐसा नहीं किया।

-बहुत समय पहले, परमेश्वर ने कुछ लोगों को चुना, और अपने वचनों को इन लोगों के दिमाग में डाल दिया।

-फिर, इन लोगों ने परमेश्वर के वचनों को परमेश्वर की पुस्तक में लिखा।

-क्या इन लोगों ने अपने शब्दों को खुदा की किताब में लिखा है?

-नहीं।

-ये लोग जिन्हें परमेश्वर ने चुना है, उन्होंने अपने वचन स्वयं नहीं लिखे।

-ये लोग जिन्हें परमेश्वर ने चुना है, उन्होंने केवल परमेश्वर के वचन लिखे हैं।

-इन लोगों ने जिन्हें परमेश्वर ने चुना था, उन्होंने परमेश्वर के वचनों को ठीक वैसे ही लिखा जैसे परमेश्वर ने उन्हें बताया था।

-परमेश्वर ने अपने वचनों को अपनी पुस्तक में लिखने के लिए कुछ चालीस लोगों को चुना।

-क्या ये लोग एक ही समय में रहते थे और परमेश्वर के वचनों को लिखते थे?

-नहीं।

-ये लोग जिन्हें परमेश्वर ने अपने वचन लिखने के लिए चुना था, वे सभी एक ही समय में जीवित नहीं थे।

-परमेश्वर के सभी वचनों को लिखने में कितने वर्ष लगे?

- उन सभी लोगों को 1,600 साल लगे जिन्हें परमेश्वर ने अपने वचन लिखने के लिए चुना था

-ये कौन लोग थे जिन्हें परमेश्वर ने अपने वचन लिखने के लिए चुना था?

-जिन लोगों को परमेश्वर ने अपने वचन लिखने के लिए चुना, वे यहूदी और एक यूनानी व्यक्ति थे।

-इन लोगों ने किस भाषा में परमेश्वर के वचन लिखे?

-यहूदी और ग्रीक भाषाओं में।

-क्या इन लोगों ने अंग्रेजी भाषा में परमेश्वर के वचन लिखे थे?

-नहीं।

-क्या इन लोगों ने स्पेनिश भाषा में परमेश्वर के वचन लिखे थे?

-नहीं।

-क्या इन लोगों ने फ्रेंच भाषा में परमेश्वर के वचन लिखे थे?

-नहीं।

-इन लोगों ने परमेश्वर के वचनों को अपनी भाषा में लिखा।

-क्योंकि जिन लोगों को परमेश्वर ने अपने वचन लिखने के लिए चुना था, वे यहूदी और एक यूनानी व्यक्ति थे,

-इन लोगों ने यहूदी और यूनानी भाषाओं में परमेश्वर के वचन लिखे।

- बाद में, अन्य लोग यहूदियों के देश में आए, परमेश्वर के वचनों को पढ़ा, और उन्हें अपनी भाषा में लिखा।

-परमेशवर के शब्दों का दुनिया की कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

-परमेश्वर के वचनों का अब आपकी भाषा में अनुवाद किया जा रहा है।

-परमेश्वर की पुस्तक में परमेश्वर के कितने वचन सत्य हैं?

-उन सभी को।

-परमेश्वर की पुस्तक में परमेश्वर के सभी वचन सत्य क्यों हैं?

-क्योंकि परमेशवर कभी झूठ नहीं बोलते।

-क्योंकि परमेशवर केवल सच कहते हैं।

-हम परमेश्वर के सभी वचनों पर परमेश्वर की पुस्तक में विश्वास क्यों कर सकते हैं?

-क्योंकि परमेशवर कभी झूठ नहीं बोलते।

-क्योंकि परमेशवर केवल सच कहते हैं।

- अकेला कौन है जो हमेशा सच बोलता है?

-परमेशवर।

-मैंने परमेश्वर के वचनों को परमेश्वर की पुस्तक में पढ़ा है, और मुझे पता है कि परमेश्वर के सभी वचन सत्य हैं।

-यदि आप परमेश्वर के वचनों को सुनते हैं, तो आप यह भी जानेंगे कि परमेश्वर के सभी वचन सत्य हैं।

-ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेशवर कभी झूठ नहीं बोलते।

-ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेशवर केवल सच कहते हैं।

-परमेशवर के पास हमसे कहने के लिए बहुत कुछ है।

-इसलिए, आपको परमेश्वर के वचन सिखाने में कई दिन लगेंगे।

-यहाँ एक दृष्टांत है:

- खेती करना सीखने में कितने दिन लगते हैं?

-बहुत दिन।

- खेती करना सीखने में कई दिन क्यों लगते हैं?

-क्योंकि खेती के बारे में जानने के लिए कई सच्चाई हैं।

-आपको सीखना होगा कि मिट्टी कैसे तैयार की जाती है।

-आपको बीज बोना सीखना होगा।

-आपको यह सीखना होगा कि मातम की खेती कैसे करें।

-आपको सीखना होगा कि फसल कैसे काटें।

-जैसे खेती करना सीखने में कई दिन लगते हैं, वैसे ही परमेश्वर के वचनों को सीखने में कई दिन लगते हैं।

-ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर के वचनों में कई सत्य हैं।

-यदि आप कई दिनों तक परमेश्वर के वचनों को सुनते हैं, तो आप परमेश्वर के बारे में कई सत्य सीखेंगे।

-यहाँ एक और दृष्टांत है:

- क्या आप रोज खाना खाते हैं?

-हां।

- तुम रोज खाना क्यों खाते हो?

-क्योंकि आपके शरीर को प्रतिदिन भोजन की आवश्यकता होती है।

-जैसे आपके शरीर को प्रतिदिन भोजन की आवश्यकता होती है, वैसे ही आपको भी प्रतिदिन परमेश्वर के वचनों को सुनने की आवश्यकता है।

- रोज नहीं खायेंगे तो क्या होगा?

-तुम मर जाओगे।

-यदि आप प्रतिदिन परमेश्वर के वचन नहीं सुनते हैं, तो आप भी मर जाएंगे।

-कुछ लोग परमेशवर के संदेश को क्यों नहीं जानते?

-क्योंकि ये लोग परमेशवर का संदेश सुनने से इनकार करते हैं।

-क्योंकि ये लोग परमेशवर के संदेश पर विश्वास करने से इनकार करते हैं।

-यदि आप प्रतिदिन परमेश्वर के वचनों को सुनते हैं, तो आप प्रसन्न होंगे।

-यदि आप प्रतिदिन परमेश्वर के वचन नहीं सुनते हैं, तो आप दुखी होंगे।

-मुझे आशा है कि आप प्रतिदिन परमेश्वर के वचन सुनने आएंगे।